जटाकटाह = भगवान शिव की जटाएँ (बाल)

सम्भ्रमभ्रमन् = तेजी से घूमती हुई

निलिम्पनिर्झरी = स्वर्ग की नदी (गंगा जी)

विलोलवीचिवल्लरी = लहरों की सुंदर लताएँ

विराजमानमूर्धनि = उनके सिर पर शोभा दे रही हैं

धगद्धगद्धगज्ज्वलत् = धधकती हुई अग्नि

ललाटपट्टपावके = शिव जी के माथे की अग्नि (तीसरा नेत्र)

किशोरचन्द्रशेखरे = जिनके सिर पर छोटा चन्द्रमा है

रतिः प्रतिक्षणं मम = मेरी भक्ति हर क्षण बनी रहे

धराधरेन्द्र = पर्वतों के राजा (हिमालय)

नन्दिनी = उनकी पुत्री (पार्वती जी)

विलासबन्धु = जिनके साथ शिव जी लीला करते हैं

बन्धुर = सुंदर

स्फुरत् दिगन्त सन्तति = चारों दिशाओं में फैलती हुई

प्रमोदमान मानस = जिनका मन आनंद से भरा है

कृपा = दया

कटाक्ष = कृपा भरी नजर

धोरणी = धारा (प्रवाह)

निरुद्ध = रोकने वाली

दुर्धर आपदि = बड़ी कठिन मुसीबत

क्वचित् दिगम्बरे = दिगम्बर रूप वाले शिव में (जो आकाश को वस्त्र मानते हैं)

मनो विनोदम् एतु = मेरा मन आनंद पाए

वस्तुनि = उस भगवान में

जटा = शिव जी की जटाएँ

भुजङ्ग = सर्प (साँप)

पिङ्गल = भूरे रंग का

स्फुरत् फणा मणि प्रभा = फन की मणि की चमक

कदम्ब कुंकुम द्रव = कुंकुम (सिंदूर) का लेप

प्रलिप्त = लगा हुआ

दिग्वधू मुखे = दिशाओं रूपी दुल्हनों के मुख पर

मदान्ध = घमंड से भरा हुआ

सिन्धुर = हाथी

स्फुरत् त्वग् उत्तरीय = जिसकी चमड़ी को वस्त्र की तरह पहना है

मेदुरे = महान / विशाल

मनो विनोदम् अद्भुतम् = मन को अद्भुत आनंद देने वाला

बिभर्तु = प्रदान करे

भूतभर्तरि = सभी प्राणियों के स्वामी (भगवान शिव)

सहस्रलोचन = हजार आँखों वाले (इन्द्र देव)

प्रभृति = आदि

अशेष लेखशेखर = अन्य सभी देवता

प्रसून = फूल

धूलि = धूल

धोरणी = धारा

विधूसर = धूल से ढका हुआ

अङ्घ्रि पीठ = चरण (पैर)

भूः = जिनके

भुजङ्गराज = सर्पों के राजा (नागराज)

मालया = माला के रूप में

निबद्ध = बंधी हुई

जाटजूटक = शिव जी की जटाएँ

श्रिये = कल्याण / समृद्धि के लिए

चिराय = हमेशा के लिए

जायताम् = प्राप्त हो

चकोरबन्धु = चन्द्रमा

शेखरः = सिर पर धारण करने वाले (शिव)

ललाटचत्वर = शिव जी का माथा

ज्वलत् = जलता हुआ

धनञ्जय स्फुलिङ्ग भा = अग्नि की चिंगारियों जैसी चमक

निपीत = भस्म कर दिया / नष्ट कर दिया

पञ्चसायकम् = कामदेव (जिसके पाँच बाण हैं)

नमन् = नमस्कार करते हैं

निलिम्पनायकम् = देवताओं के स्वामी (शिव)

सुधा = अमृत

मयूख लेखया = चन्द्रमा की किरणों से

विराजमान शेखरं = सिर पर शोभित

महाकपालि = बड़े कपाल (खोपड़ी) धारण करने वाले

सम्पदे = समृद्धि के लिए

शिरोजटालम् = शिव जी की जटाएँ

अस्तु नः = हमें प्राप्त हों / हमारे लिए हों

कराल = भयानक / प्रचण्ड

भालपट्टिका = माथे का भाग

धगद्धगद्धगज्ज्वलत् = धधकती हुई आग

धनञ्जय आहुती कृत = अग्नि में आहुति की तरह जला दिया

प्रचण्ड पञ्चसायके = कामदेव (जिसके पाँच बाण हैं)

धराधरेन्द्रनन्दिनी = पर्वतराज हिमालय की पुत्री (पार्वती जी)

कुचाग्र = वक्षस्थल (छाती)

चित्रपत्रक = सुंदर चित्र / अलंकरण

प्रकल्पनैकशिल्पिनि = बनाने वाले महान कलाकार

त्रिलोचने = तीन नेत्र वाले भगवान शिव

रतिः मम = मेरी भक्ति / प्रेम

नवीन मेघ मण्डली = नए बादलों का समूह

निरुद्ध = ढका हुआ

दुर्धर स्फुरत् = तेज चमक

कुहू निशीथि = अमावस्या की रात का अंधकार

नीतमः = अंधकार

प्रबन्ध बन्ध कन्धरः = जिनका गला बंधा हुआ है (नीलकंठ – विष से नीला गला)

निलिम्प = देवता

निर्झरीधरः = गंगा को धारण करने वाले (शिव)

स्तनोतु = प्रदान करें

कृत्ति सिन्धुरः = हाथी की खाल धारण करने वाले

कलानिधान = सभी कलाओं के खजाने

बन्धुरः = सुंदर

श्रियम् = समृद्धि

जगद्धुरंधरः = पूरे संसार को संभालने वाले

प्रफुल्ल = खिला हुआ

नील पङ्कज = नीला कमल

प्रपञ्च कालिम प्रभा = गहरे अंधकार जैसी चमक

वलम्बि = लटकती हुई

कण्ठ कन्दली रुचि = गले की सुंदर चमक

प्रबद्ध कन्धरम् = जिनका गला सुशोभित है

स्मरच्छिदं = कामदेव का नाश करने वाले

पुरच्छिदं = त्रिपुर (तीन नगर) का नाश करने वाले

भवच्छिदं = जन्म-मृत्यु के बंधन को नष्ट करने वाले

मखच्छिदं = यज्ञ का नाश करने वाले (दक्ष यज्ञ)

गजच्छिदं = गजासुर का नाश करने वाले

अन्धकच्छिदं = अंधकासुर का नाश करने वाले

तमन्तकच्छिदं = मृत्यु के भी अंत करने वाले

भजे = मैं भक्ति करता हूँ

अखर्व = अनंत / असीम

सर्वमङ्गला = सभी प्रकार के शुभ

कला कदम्ब मञ्जरी = अनेक कलाओं का समूह

रस प्रवाह माधुरी = मधुर रस का प्रवाह

विजृम्भणा = फैलने वाली

मधुव्रतम् = मधुमक्खी के समान आकर्षित

जयतु = विजय हो / जय हो

अदभ्र विभ्रम = महान और शक्तिशाली गति

भ्रमद् भुजङ्गम = घूमते हुए सर्प

श्वसत् विनिर्गमत् = साँस छोड़ते हुए

क्रम स्फुरत् = गति से चमकते हुए

कराल भाल = भयानक माथा

हव्यवाट् = अग्नि (यज्ञ की अग्नि के समान)

धिमिद्धिमिद्धिमि = ढोल (मृदंग) की ध्वनि

ध्वनन् = बजती हुई

मृदङ्ग = मृदंग (ढोल)

तुङ्ग मङ्गल ध्वनि = ऊँची और शुभ ध्वनि

क्रम प्रवर्तित = शुरू करने वाली

प्रचण्ड ताण्डवः = शक्तिशाली तांडव नृत्य

शिवः = भगवान शिव

स्पृशत् विचित्र तल्पयोः = सुंदर बिस्तर और साधारण स्थान दोनों में समान

भुजङ्ग मौक्तिक स्रजोर् = सर्प की माला और मोती की माला

गरिष्ठ रत्न लोष्ठयोः = कीमती रत्न और मिट्टी के ढेले

सुहृद् विपक्ष पक्षयोः = मित्र और शत्रु दोनों में समान

तृण = घास

अरविन्द = कमल

चक्षुषोः = आँखों में

प्रजा = सामान्य लोग

महीमहेन्द्रयोः = राजा और देवताओं के राजा (इन्द्र)

सम प्रवृत्तिकः = समान दृष्टि रखने वाला

कदा = कब

सदाशिवं भजामि अहम् = मैं सदाशिव की भक्ति करूँगा

कदा = कब

निलिम्प निर्झरी = गंगा जी (देवताओं की पवित्र नदी)

निकुञ्ज कोटरे वसन् = वन या गुफा में रहते हुए

विमुक्त दुर्मतिः = बुरी बुद्धि से मुक्त होकर

सदा = हमेशा

शिरःस्थ अञ्जलिं वहन् = सिर पर हाथ जोड़कर प्रणाम करते हुए

विमुक्त = मुक्त / स्वतंत्र

लोल लोचनः = चंचल आँखों वाला (भक्ति में मग्न)

ललाम भाल लग्नकः = माथे पर शिव का चिन्ह धारण करने वाला

शिव इति मन्त्रं उच्चरन् = “शिव” मंत्र का जाप करते हुए

कदा = कब

सुखी भवामि अहम् = मैं सुखी बनूँगा